कथनी करनी की एकरूपता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

कथनी का अर्थ है– कथन और करनी का अर्थ है क्रिया। मनुष्य के कथनी और करनी में समानता होनी चाहिए। हम जैसा कहते हैं वैसा करें और जैसा करते हैं वैसा कहें यही कथनी करनी की समानता है। कथनी करनी की समानता यथार्थ जीवन से जुड़ा हुआ है। बोलते समय हृदय की तराजू पर तौलकर वाणी बाहर निकालनी चाहिए। वाणी अभिव्यक्ति का माध्यम है। सभी प्राणियों में बोलने की क्षमता है लेकिन सभी प्राणी अव्यक्त भाषा में बोलते हैं। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो स्पष्ट बोलता है। हम शब्दों के माध्यम से अपने विचारों को प्रकट करते हैं। भाव भीतरी जगत से जुड़ा हुआ है। भीतर हम जैसा सोचते हैं वाणी उसी को व्यक्त करती है।

मानव एक सांसारिक प्राणी है। वह समाज में रहता है, समाज का व्यवहार चलाने के लिए उसे सम्बन्धों का ताना–बाना बुनना पड़ता है। समाज में मनुष्य के व्यक्तित्व का मूल्यांकन उसके कथनी और करनी से किया जाता है। इसीलिए कहा गया है–

वाणी ऐसी बोलिए, मन का आपा खोय।

औरन को शीतल करें, आपहु शीतल होय।।

मनुष्य को ऐसी वाणी का व्यवहार करना चाहिए जो अपने साथ दूसरों का भी हित चिंतन करें। समाज में आजकल इसके विपरीत ही देखा जाता है। लोगों के व्यवहार और विचार में बहुत अन्तर पाया जाता है। सामने मधुर बोलते हैं और पीठ पीछे छूरा भोकने का काम करते हैं। ऐसे लोग धोखेबाज कहलाते हैं। इनके ऊपर कोई विश्वास नहीं करता। राजनीतिज्ञों के लिए भी यह विषय बड़ा उपादेय है। वे लोग भी ठीक इसके विपरीत आचरण करते हैं उनकी कथनी और करनी में समानता नहीं रहती। भ्रष्टाचार यहीं से प्रारम्भ हो जाता है।

सुख और दुःख आत्मकृत है। सुख और दुःख किसी अदृश्य सत्ता के द्वारा नहीं दिया जाता। यदि हम किसी भी प्राणी को सुख देते हैं तो हमें भी सुख मिलता है। यदि हम किसी भी प्राणी को दुःख देते हैं तो हमें भी दुःख मिलता है। सुख और दुःख का कारण कोई अन्य नहीं बल्कि आत्मकृत कर्म है। प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। यह सनातन सत्य है। बुराई का पहले कारण तैयार होता है तब दुर्गुण आते हैं। यदि हमने गलत कार्य किया है तो परिणाम भी हमें ही भुगतना पड़ेगा। एक हाथ से ताली नहीं बजती। ताली बजाने के लिए दोनों हाथों की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति दूसरों के लिए कुंआ खोदता है उस कुंए में दूसरा व्यक्ति गिरे या ना गिरे खोदने वाला पहले उसमें गिरता है। इसलिए किसी प्राणी को दुःख नहीं देना चाहिए।

जो जैसा बीज बोता है उसे वैसा फल भोगना पड़ता है। यदि आम का बीज बोया गया है तो आम का फल प्राप्त होगा और यदि बबूल का वृक्ष बोया गया है तो बबूल के कांटे ही प्राप्त होंगे। कभी किसी दूसरे व्यक्ति का दिल नहीं दुखाना चाहिए। सदैव अच्छे कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। शत्रु को भी मित्र बनाने की कला सिखनी चाहिए। यदि सभी के साथ मित्रवत् व्यवहार किया जाता है तो शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

सुख और दुःख का अन्तर्दर्शन क्या है ? इस विषय पर चिन्तन किया जा रहा है। जो अनुकूल है वह सुख है और जो प्रतिकूल है वह दुःख है। सुख और दुःख मनुष्यकृत है। प्रायः लोग यह कहते हैं कि सुख और दुःख किसी दूसरे के द्वारा दिया जाता है किन्तु यदि गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाये तो यह प्रतीत होता हैं कि सुख दुःख मनुष्य का अपना बोया हुआ है। दार्शनिक दृष्टि से देखा जाये तो आत्मरमण करना ही सुख है। इसके अतिरिक्त जितनी भी सांसारिक वस्तुएं हैं, वे सब दुःख स्वरूप है।

वैभाविक जितनी भी प्रवृत्तियां है उनसे दुःख ही उत्पन्न होता है, किन्तु मानव उन्हें ही सुख स्वरूप मानता है। जैसे कुत्ता सुखी हुयी हड्डी को खाता हैं और स्वयं के मुख से निकले हुये रक्त को चाटकर सुख की अनुभूति करता है वैसे ही यह सांसारिक सुख भी है। मानव माया स्वरूप इस संसार को सत्य मानकर के व्यवहार करता है। यह मेरा है, यह तेरा है इसी में पूरे

जीवन को बिता देता है। जो वास्तविक सुख है उधर उसका ध्यान ही नहीं जाता। इसीका परिणाम है कि वह दुःख को सुख मान बैठता है और प्रसन्नता का अनुभव करता है।

यथार्थ का ज्ञान होने पर सत्य की प्रतीति हो जाती है। दर्शन का सत्य यही है। प्रायः सभी दर्शनों में सुख और दुःख की मीमांसा की गई है और सभी दर्शनों ने इसके स्वरूप को जानने का प्रयास किया है। सभी दर्शनों का सत्य प्रायः समान ही है। रास्ते अलग–अलग है। जिस प्रकार से नदियां अनेक मार्गों से होती हुई अन्त में समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार से चिन्तन की धाराएं सभी दर्शनों की अलग–अलग हैं, किन्तु अन्तिम सत्य सबका एक ही है। मोक्ष जो जीवन की अन्तिम अवस्था है, वही पूर्ण सत्य है। इसको प्राप्त करने के लिए सभी दर्शनों ने अपने–अपने मार्ग बतलाये हैं। कथनी करनी की समानता से ही जीवन के साध्य को प्राप्त किया जा सकता है।